सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 1 अंक 7 | सितंबर 2013 | केवल निजी प्रसार हेतु

सिक्किम विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह

67वाँ स्वतंत्रता दिवस मानाने के लिए जब सिक्कीम विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक, अधिक. ारी और कर्मचारीगण प्रशासनिक भवन के प्रांगण में एकत्रित हो रहे थे तब संगीत विभाग के प्रथम वर्ष के छात्र पार्थो सिल ने बाँसुरी वादन से वातावरण को मनमो. हक बना दिया. और कैप्टन दुक्पा जी ने औपचारिक श्सलामी के लिए अपने साथियों को तैयार किया.कुलपति प्रो. टी.बी.सुब्बा के आगमन और कैप्टन दुक्पा की कमांड ने वातावरण को झंकरित कर दिया.

प्रो सुब्बा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और संगीत विभाग से हमारे अपने छात्रों ने राष्ट्रगान में सभा का नेतृत्व किया.

सभा को संबोधित करते हुए प्रो सुब्बा ने इस दिन को मनाने के लिए तीन कारणों का वर्णन किया रू उनको याद करने लिए जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए तमाम मुश्किलों का सामना किया और अपना जीवन न्योछावर कर दियारू ये समझने के लिए आजादी का मतलब है प्रजा और नागरिक के बीच अंतर रू और यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस आजादी को कहीं हम खो न दें.

अपनी बात को स्पष्ट करते हुए प्रो. सुब्बा ने कहा कि सभा में मौजूद अधिकांश या शायद सभी लोग उस पी□ी के हैं जो 15 अगस्त 1947 को भारत के आजाद होने के बाद जन्मे हैं इसलिए उन्हें आजादी के लिए संघर्ष नहीं करना प□ा. इसलिए स्वतंत्रता दिवस को मनाने और आजादी प्राप्त करने के लिए पिछली पी□ी के त्याग को याद करने का अपना महत्त्व है. उन्हा. ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि आजादी न सिर्फ नेताओं बल्कि अनगिनत व्यक्तियों के बलिदानों का ही परिणाम है.

उन्होंने कहा कि जिन्होंने आजादी के लिए कठिनाइयों का सामना किया और यहाँ तक कि अपना जीवन तक कुर्बान कर दिया, उन्हें याद करके और उनका सम्मान करके ही आजादी के अर्थ – एक आजाद नागरिक और गुलाम होने के अंतर को समझा जा सकता है और इस आजादी को सुरक्षित रखा जा सकता है. और आज के इस समारोह से हमें इस बात का भी एहसास होना चाहिए कि आजादी केवल अधिकार ही नहीं बल्कि जिम्मेदारी भी है.प्रो. सुब्बा ने इस बात पर जो दिया कि अपने राष्ट्र और जिस संस्था ने हमें हमारी पहचान दी हैं उसके प्रति निष्ठा वास्तव में स्वतंत्रता की आधारशिला है.

उन्होंने यह भी कहा कि संस्थाओं को समर्पित होकर संरक्षित रखने और पोषित करने के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि हम ऐसा कुछ न करें जिससे उन संस्थाओं को क्षति हो जिनसे हम जु□ हुए हैं.कैप्टन डुक्पा की अपने गार्ड्स को राष्ट्रीय ध्वज की सलामी के लिए दिए गए आदेश और सभा में उपस्थित सभी लोगों के नाश्ते पर जाने जाने के साथ समारोह का समापन हुआ.

ये भी पड़िए

- सिक्किम विश्वविद्यालय व्याख्यान श्रृंखला 2013... Pg.2

. हिमालय इंटरनेशनल फेस्टिवल 2013...Pg.3

. 21वाँ भाषा मान्यता दिवस ...Pg.3

- प्रकाशन, आमंत्रण पर व्याख्यान ...pg4

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 2

खंड 1 अंक 7 | सितंबर 2013 | केवल निजी प्रसार हेतु

सिक्किम विश्वविद्यालय व्याख्यान श्रृंखला 2013

डॉ. सरोज गिरि, सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभ. ाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने सिक्किम विश्वविद्यालय व्याख्यान श्रृंखला के भाग के रूप में, 29 और 30 अगस्त 2013 को छात्रों, शिक्षकों और विश्वविद्यालय के स्टाफ के सदस्यों को संबोधित किया.इस बार रा. जनैतिक विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित किए गए व्याख्यान में विषय थे – श्साम्राज्यवाद के युग में कट्टरपंथी राजनीति रू चुनौतियां और संभावनाएंश (29 अगस्त) और श्भारत में राष्ट्रीयता प्रश्नरू छोटे राज्यों के मुद्देश (30 अगस्त).

डॉ गिरी के शैक्षिक अवधारणाओं और उपाख्यानों और तत्क. ालीन संदर्भ के उदाहरणों से भरपूर व्याख्यानों को बहुत ध्यान से सुना गया.व्याख्यान सुनने के लिए व्याख्यान कक्ष के खचाखच भरे होने का नजारा देखने लायक थे और विशेषकर तब जब मंच को परिचर्चा के लिए खोल दिया गया.

29 अगस्त,को डा. गिरि ने साम्राज्यवाद के सिद्धांत पर बात कि और कहा कि यह केवल हमारे समय में एक शब्दजाल नहीं बल्कि एक वास्तविकता थी रू उन्होंने दो विस्तृत प्रकारों का जिक्र किया जिनसे साम्राज्यवाद को समझा जा सकता है – लेनिनवादी और उग्र राजनीति की सम्भावना को की व्याख्या करने के लिए अंटोनियो नेग्री एवं मिचेल हार्द्त द्वारा प्रतिपादित. डॉ गिरी ने यह स्पष्ट करते हुए कि वो लेनिनवादी मॉडल के पक्षधर हैं बजाय उसके जो कि नेग्री द्व ारा प्रतिपादित है, देश भर में उग्र विरोधों के उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट किया.

फिर डॉ गिरी ने भारत और विश्वभर में सूचना और संचार की नई तकनीकों के माध्यम से जनमत जुटाने के नए तरीकों की विस्. तार से बात की. उन्होंने प्रदर्शनकारियों के बदलते तरीकों को समझने की आवश्यकता पर बल दिया रू कि वे उभरते हुए मध्यम वर्ग के हैं और अधिकांश विरोध–प्रदर्शन मध्यम वर्ग से सीधे जु□ मुद्दों के बारे में हैं. उन्होंने कहा कि मध्यम वर्ग को समझने की कोशिश करते हुए आवश्यक है कि उनके मुद्दों को ध्यान में रखा जाए.वक्ता इस मामले में बिलकुल स्पष्ट था कि जनमत संग्रह के नए माध्यमों से जु□ रहना सभी के लिए आवश्यक है.सत्र के अध्यक्ष कुलपति प्रो. टी.बी.सुब्बा ने भी इस बात पर बल दिया.

अपने दुसरे व्याख्यान की और बढते हुए डॉ गिरी ने पृथक गोरखलैंड की मांग और चल रहे विरोध प्रदर्शनों की और रुख किया जो कि निश्चित रूप से राष्ट्रीयता के मुद्दे का एक निश्चित हिस्सा है. हालांकि डॉ गिरी ने आन्दोलन की कमियों की और इशारा किया और इस बात पर जोर दिया कि इस मांग को ब□ स्तर पर क्षेत्र के लोगों में प्रचारित प्रसारित किया जाए.प्रो प्रताप चंद्र प्रधान, डीन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ की अध्यक्षता में हुए इस व्याख्यान का समापन इसमें भागीदारी कर रहे छात्रों और शिक्षकों के बीच जोरदार चर्चा के साथ हुआ.

संपादक की कलम से

अगस्त 2013 वास्तव में बहुत से घटनाक्रमों वाला महीना था.प्रवेश नीति में परिवर्तन के साथ, सिक्किम विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या 300 फीसदी तक बढ़ गई है. ग्यारह नए विभाग, जिनमे से पाँच पिछले वर्ष शुरू किए थे और उनकी कक्षाएं सिक्किम गवर्नमेंट कॉलेज, तादोंग में चल रही थीं, खुलने से विश्वविद्यलय में छात्रों की संख्या काफी ब□ गई है. और विश्वविद्यालय ने हॉस्टल के लिए दो और इमारतों को किराए पर लिया है.

विकेन्द्रीकृत प्रवेश प्रक्रिया का मतलब है पूरी की पूरी प्रक्रिया – आवेदन प्राप्त करने से मेरिट सूचियों की तैयारी तक – विभिन्न विभागों द्वारा नियंत्रित की जा रही है.इस साल विश्वविद्यालय की फीस संरचना में भी परिवर्तन किया गया है. और कक्षाएं 7 अगस्त 2013 से शुरू हुई. दार्जिलिंग जिले में बंद के कारण गंगटोक आने के यातायात साधनों में व्यवधान के कारण यह निर्धारित तिथि से एक सप्ताह बाद करना प□ा.

इस शैक्षणिक वर्ष के लिए पहला बड़ा उत्सव का अवसर स्वतंत्रता दिवस था.और उसके तुरंत बाद ही 29 और 30 अगस्त को दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ. सरोज गिरि के दो व्याख्यानों का एक कार्यक्रम था.इस बीच संगीत विभाग श्हिमालय इंटरनेशनल फेस्टिवलश आयोजित करने में व्यस्त रहा जबकि नेपाली भाषा और साहित्य विभाग ने उपयुक्त तरीके से श्नेपाली भाषा दिवसश मनाया. इन सभी पर विस्तृत रिपोर्ट इस अंक में शामिल हैं.

इस बीच, अब इस वर्ष विश्वविद्यालय में शामिल होने वाले छात्रों के साथ संपादकीय बोर्ड का विस्तार करने का समय है.स्वयंसेवकों का स्वागत हैं.

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 3

खंड 1 अंक 7 | सितंबर 2013 | केवल निजी प्रसार हेतु

हिमालय इंटरनेशनल फेस्टिवल 2013

हिमालयन हेरिटेज रिसर्च एंड डेवलपमेंट सोसायटी ने सिक्किम विश्वविद्यालय, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसी.ीआर) और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 6 से 10 अगस्त 2013 तक षहिमालय इंटरनेशनल फेस्टिवल 2013 श्का आयोजन किया.

पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव के कार्यक्रमों की श्रृंखला में पहला कार्यक्रम एक प्रदर्शनी थी. यह उत्सव का उद्घाटन समारोह भी था. यह संगीत विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय में आयोजित किया. उत्सव का उद्घाटनपरीक्षा नियंत्रक डॉ गुरुंग, डॉ धनी राज छेत्री और संगीत विभाग एवं विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों की उपस्थिति में पद्मश्री सोनम छेरिंग लेप्चा और डॉ ओम प्रकाश भारती द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ.

8 अगस्त को सिक्किम गवर्मेंट कॉलेज, तादोंग के सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया.हिमालय क्षेत्र की विविध संस्कृति के संगीत और नृत्य से भरपूर यहाँ कार्यक्रम वास्तव में एक रंगारंग कार्यक्रम था. कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रो टीबी सुब्बा, कुलप. ति, सिक्किम विश्वविद्यालय,डॉ विभूति नारायण राय,कुलपति महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, मानव संसाधन विकास मंत्रालय में निदेशक डॉ. ओमप्रकाश भ. ारती, श्री शंकर देव ढकाल, नेपाली साहित्य के प्रसिद्ध हस्ताक्षर और संगीत विभाग के शिक्षकों द्वारा दीप–प्रज्ज्वलन के साथ शुरू हुआ.

दो दिन के संगीत समारोह के बाद उत्सव का अंतिम बौद्धिक कार्यक्रम – जैम बनस. जनतंस ज्तंकपजपवद ंदक पदकपहमदवने ादवूसमकहम व िभ्पउंसं. लंद म्जीदपब ळतवनच विषय पर सेमिनार 10 अगस्त को सिक्किम विश्वविद्यालय के कांफ्रेंस हॉल में हुआ.

21वाँ भाषा मान्यता दिवस

नेपाली भाषा और साहित्य विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय ने सम्मेलन हॉल, न्यू शैक्षणिक भवन में 20 अगस्त, 2013 को 21वें भाषा मान्यता दिवस और भानु स्मृति दिवस का आयोजन किया.प्रो प्रताप चंद्र प्रधान, डीन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता जिसमे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री महानंदा पौडेल मुख्य अतिथि थे. अन्य विशिष्ट अतिथिओं में कुलपति प्रो टीबी सुब्बा, श्री पेम्पा तामंग (अध्यक्ष, सिक्किम अकादमी), श्री चू□ामणि खातिवादा (अध्यक्ष, नेपाली साहित्य परिषद) और रजिस्ट्रार श्री के.एम. देव थे.

कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथियों द्वारा अदि कवि भानुभक्त आचार्य को खदा समर्पित करने के साथ हुई.प्रोफेसर सुब्बा ने श्री पौडेल जो कि प्रोफेसर सुब्बा के एक स्कूल शिक्षक है को एक शाल और नेपाली टोपी भेंट की.प्रोफेसर सुब्बा को भी, उनके शिक्षक द्वारा एक नेपाली टोपी भेंट की गई.इसके बाद उन्होंने नेपाली भाषा की उत्पत्ति एवं विकास और भारतीय संविधान की 8 वीं अनुसूची में शामिल करने के लिए उसके संघर्ष पर प्रकाश डाला.प्रो. सुब्बा ने अपनी बात रखते हुए व्याकरणिकता और भाषा की शुद्धता में अंतर स्पष्ट किया, और साथ ही भाषा शिक्षण में संवाद के नजरिए को रेखांकित किया.

इस अवसर पर डॉ. राजेंद्र भंडारी, श्री प्रवीण राय जुमेली , और श्री निर्मल निरुला ने अपनी कविताएं सुनाई. श्री पारसमणि ने नेपाली भाषा और साहित्य विभाग को साहित्य सृजन सहकारी समिति और निर्माण के प्रकाशन की ओर से कई पुस्तकें और पत्रिकाएं भेंट की.प्रो प्रधान ने उदयानंद आर्यल के महाकाव्य जो कि नेपाली प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित नेपाली भाषा का पहला महाकाव्य माना जाता है, पर चर्चा कि और उसे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के लिए कुलपति प्रो सुब्बा को भेंट किया.

डॉ. कबिता लामा, नेपाली भाषा और साहित्य विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया और श्री बलराम पांडे, नेपाली भाषा और साहित्य विभाग में सहायक प्रोफेसर ने कार्यक्रम का संचालन किया.समारोह में विश्वविद्यालय, गवर्नमेंट कॉलेज, तादोंग और नामची के संकाय सदस्यों और विभिन्न साहित्यिक संगठनों के सदस्यों ने ब□ी संख्या में भाग लिया.

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 4

खंड 1 अंक 7 | सितंबर 2013 | केवल निजी प्रसार हेतु

प्रकाशन

डॉ. अमिताभ भट्टाचार्य, एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग
शीर्षक ष्इंडल्ज योर वेंडरलस्ट रू ई–सेवी क्वीन ऑफ हिल्स बैकन्सष सेल्सियन जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटी□ एंड सोशल साईन्सिज, टेक्नॉलोजी एंड सोसाईटी विशेषांक, खंड चतुर्थ, (2013), अंक 1, पृष्ठ 240–280 में प्रकाशित.

रायरेबिका, रे पार्थ प्रतिम, कंप्यूटर विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसररू ष्ओपन सोर्स हार्डवेयररू एन इंट्रोडक्टरी अप्रोचष ख्स्नसन प्दब, ै।, पृष्ठ 187, अगस्त 2013
Link: http://www.lulu.com/shop/rebika-rai-and-partha-pratim-ray/open-source-hardware-an-introductory-approach/paperback/product-21169895.html

आमंत्रण पर व्याख्यान

डॉ वी. कृष्णअनंत, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग.
मीडिया और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, एशियन कॉलेज ऑफ जर्न. लिज्म, चेन्नई, जुलाई 29, 2013

डिजाइन और लेआउटरू सौरभ थापा, रिसर्च स्कॉलर, पत्रकारिता विभाग और जनसंचार